अप्रेल २०१० किमत : ३० रू

जयजिनेन्द्र

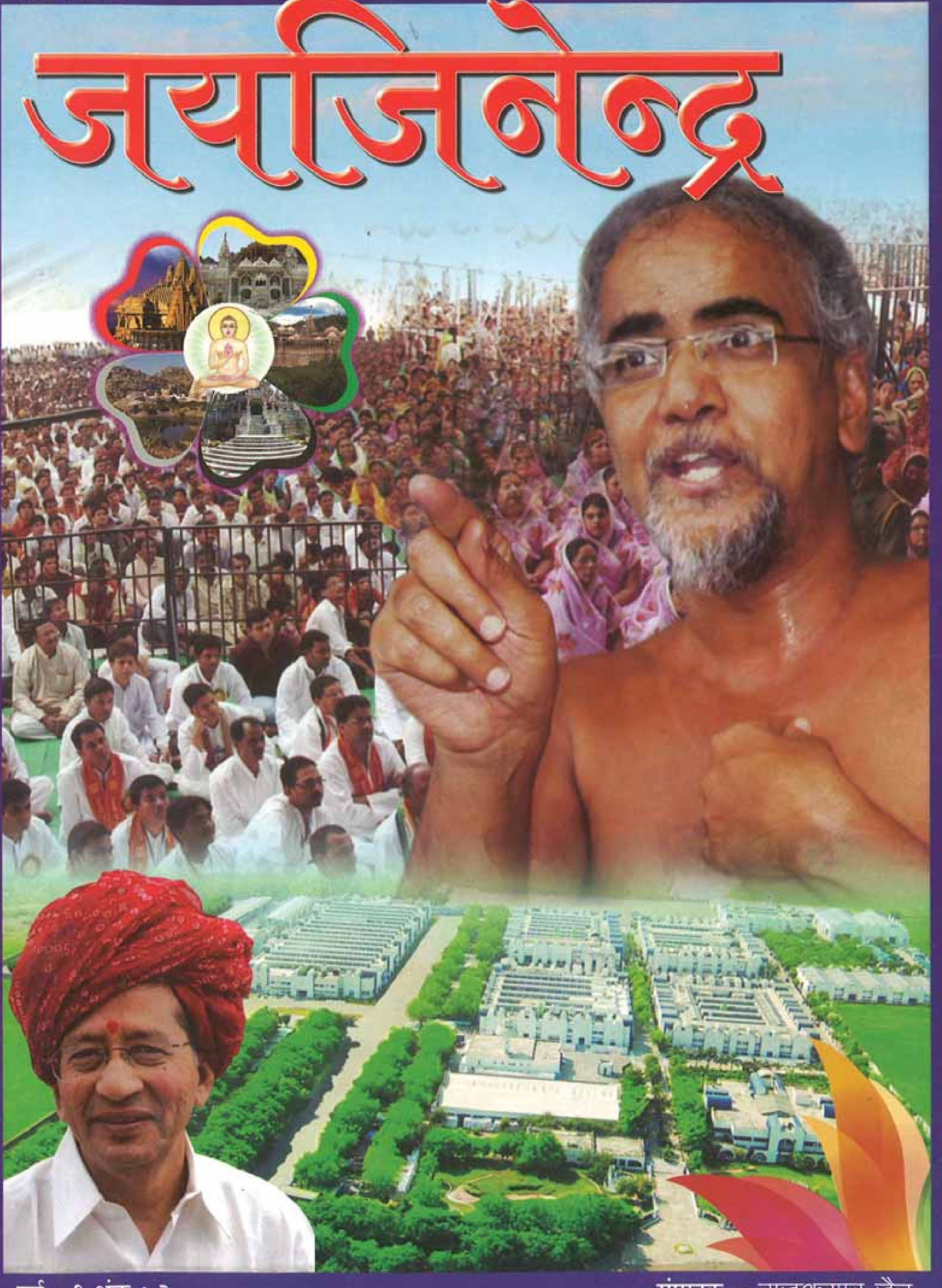

वर्ष : १ अंक : ३

संपादक – राजकुमार जैन

अहिंसा दिवस

श्री भगवान महावीर
२६१० वा जन्म कल्याणक महोत्सव

हृदयी रुजे विचार अहिंसेचा, फुलत जाई धर्म मानवतेचा
मंत्र मनःशांतीचा... मानवी प्रगतीचा

जैन इरिगेशन सिस्टीम्स् लि.

अनुभूति स्कूल

Jains D'sign Cell

भवरलाल हिरालाल जैन

घर की माली हालात ठिक न होने के बावजूद एक युवा पढने की तमन्ना लिये चल पडता है। ऊँची उड़ान के सपने, कुछ दिखाने कि आशा इस उधेड बुन में एक छोटे से व्यापार द्वारा अपने करियर की शुरुआत करता है। उसके प्रयास सफल होते है, मंजिल से दुसरी मंजिल की ओर हर कदम पर मिली सफलता से राज्य ही नहीं बल्कि देश भर में छा जाता है। कुछ दिनों बाद राष्ट्रीय स्तर पर जैन समाज का ही नहीं पूरे भारत का नाम रोशन करता है।

जलगांव जैसे छोटे जिले से शुरुआत करनेवाला जैन उद्योग समुह आज देश–विदेश में अपनी पताका फैला रहा है। इसके संस्थापक श्री भवरलाल हिरालाल जैन इनके मार्गदर्शन में इस समुह ने देश–विदेश स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त किये है, जो जैन समाज को गौरव प्रदान करती है। भवरलालजी जैसे सफल उद्योगपती ने नई पीढी को, अपने चारों सुपूत्रों को जैन उद्योग समुह का आधारस्तंभ बनाया जिसके बजह से यह समुह प्रगती पथ के राहों पर तेजी से दौड़ रहा है। विविध क्षेत्रों में यश प्राप्त करता हुआ जैन उद्योग समुह एक उच्च शिखर पर स्थापित हो गया है। जिससे जैनीयों की शान बढी है । समाज इस महान नायक पर फक्र महसूस करता है। समाज का नाम रोशन करने वाले एवंम् गौरव बढानेवाले श्री भवरलालजी जैन का परिचय देते हुए हमें खुशी होती है । इस परिचय से समाज का हर युवा प्रेरणा ले, उनके पदचिन्हों पर चले, जैन समाज के साथ राष्ट्र का गौरव बढाये इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ प्रस्तुत है श्री भवरलालजी जैन का संक्षिप्त परिचय....

जन्म	: १२ दिसम्बर १९३७
जन्म स्थल	: वाकोद, तहसील - जामनेर, जिला - जलगाँव, महाराष्ट्र
धर्म	: जैन
शिक्षण	: बी. कॉम., एल.एल बी. कॉम (विधि स्नातक)
व्यवसाय	: पेशेवर कृषक से उद्योगपति
पता	: निवास - जैन भवन, जिला पेठ, जलगाँव दूरभाष- ०२५७-२२२००९९, फॅक्स - ०२५७-२२२११९९ कार्यालय - जैन कृषि उद्यान, शिरसोली रोड, जलगाँव दूरभाष - : ०२५७-२२६००११, फॅक्स - ०२५७-२२६११३३
औद्योगिक प्रतिष्ठान -	: भारत में (९ कारखाने) जलगाँव (महाराष्ट्र) - ४, चित्तौर (आंध्रप्रदेश)- २ कोंडामडुगु (आंध्रप्रदेश) -१, उदमलपेट (तामिलनाडु) - १, वडोदरा (गुजरात) - १ : भारत के बाहर (११ कारखाने) : युएसए - ४, युरोप-३, इस्त्रायल-१ स्वीटझरलँड-१, ऑस्ट्रेलिया -१, आफ्रिका -१.

कार्य विस्तार :

कृषि - अग्रणी, पालनहार, सहनशील श्री जैन जो हाइटेक खेती के महत्वपूर्ण संस्थानों के निर्माता, जिनमें प्रमुखता से शोध एवं विस्तार की प्रक्रिया, शिक्षा, प्रदर्शन, प्रशिक्षण, एवं प्रयोगात्मक तरीकों से पूर्ण कराई जाती है।

* विविध स्थानों की कृषि भूमि के अधिग्रहण के साथ खेती फल एवं बागवानी का निष्ठा पूर्ण कार्य।
* बंजर भूमि को उपजाऊ एवं हरित बनाने, वर्षा जल संचयन के साथ सींचने, जलक्षरण को रोक कर जल पुर्नभरण, मृदा क्षरण की रोकथाम, जल श्रोतों के निर्माण व विकास की रचना में कार्यरत।
* ग्रामीण तंत्रज्ञान में हस्तक्षेप कर पृथक रूप से नियोजित कर उपयोग में लेते हुए ग्रामीण सहनशीलता को समृद्धि से परिपूर्ण करना।

औद्योगिक -

* प्राकृतिक संस्थानों के संरक्षक के रूप में पहली बार वनों के संरक्षण में विकास की गाथा को सम्मिलित किया।
* लकडी के पर्याय के रूप में प्लास्टिक उत्पादनों का निर्माण। यह उत्पादन घरेलु उपयोग के साथ अंतरराष्ट्रीय बाजार में निर्यात प्रक्रिया के साथ कारगर साबित।
* ऊर्जा या शक्ति के अन्य स्त्रोत को कार्यरत करना पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अन्य जैविक इंधन का प्रकाश एवं अन्य प्रयोगों के लिए उपयोग।
* कृषि की उपयोगिता सिद्ध करते हुए खेती के लिए प्रेरणा, महाराष्ट्र के औद्योगिक रूप से पिछडे हुए क्षेत्रों में विश्व स्तरीय फल एवं सब्जी प्रक्रिया मुहैया करवा कर निर्यात के लिए प्रेरित करना।
* पानी के रिसाव, बहाव आदि के लिए प्लास्टिक का उपयोग, नन्हे पौधे की रक्षा एवं नियंत्रण के लिए घास–पात का आवरण, कृषि क्षेत्र में बहुतायत प्लास्टिक उपयोग के लिए हृदय से एवं दृढतापूर्वक प्रोत्साहन देना।

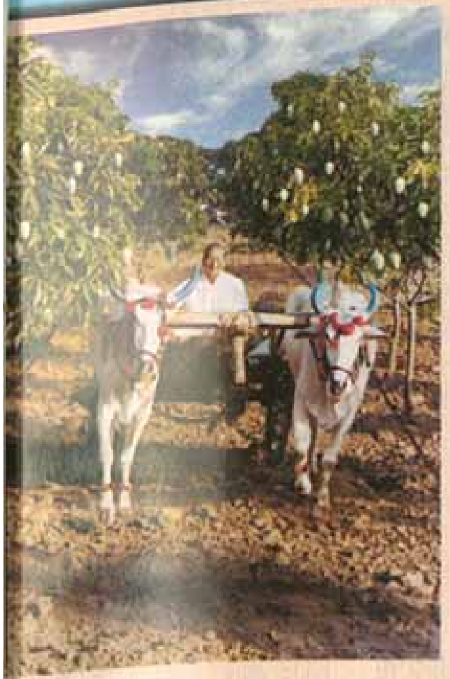

सामाजिक - प्रोत्साहक, आश्रयदाता, सहायक, रचनात्मक, श्रेष्ठता के लिए व्यक्तिगत देखभाल करनेवाले, समूह एवं संस्था के माध्यम से शिक्षा, खेलकूद, स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का विकास।

शिक्षा स्तर पर - विश्व स्तरीय निवासी विद्यालय अनुभूति की स्थापना।

* विभिन्न विषयों पर लेखन एवं प्रकाशन की लंबी श्रृंखला
* शैक्षणिक संस्थानों के साथ पारिवारिक संबंध।
* समाज के हर तबके के लोगों के साथ विविध विषयों पर संवाद एवं चर्चा कर, संभाषण के माध्यम से प्रभाव एवं प्रकाश डालना।

सामाजिक भागीदारी -

* राष्ट्रीय सूक्ष्म सिंचन संगठित बल (भारत सरकार)
* द्वितीय जल आयोग (महाराष्ट्र सरकार)
* सामाजिक एवं ग्रामीण विकास के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स (भारत सरकार)
* अजन्ता फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (महाराष्ट्र सरकार)
* प्लास्टिक प्रक्रिया उद्योग का विकास समूह (भारत सरकार)

वर्तमान सदस्यता -

* राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड नई दिल्ली (भारत सरकार)
* उच्च व्यवस्थापन मंडल, विश्वेश्वर राष्ट्रीय तकनीक संस्थान नागपूर (भारत सरकार)

राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार (१९८०-२००८) -

* बीस विविध पुरस्कार जिनमें आई आईआईई सम्माननीय सदस्यता, एफआईई फाउंडेशन पुरस्कर, जमनालाल बजाज उचित व्यवहार पुरस्कार, उद्योग विभष्ना एवं गांधी-आंबेडकर सामाजिक न्याय पुरस्कार
* चार विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा मानद उपाधि
* यूनायटेड स्टेट ऑफ अमेरिका के सिचाई संगठन द्वारा क्रफर्ड रीड मेमोरियल अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार
* पद्मश्री (भारत सरकार)

सामाजिक निर्माण में योगदान -

* एक लाख से अधिक कृषकों के जीवन स्तर को उँचा करने में सहायक।
* २५० से अधिक उद्योजकों ने प्रभावित होकर उद्योग इकाईयाँ प्रारम्भ की।
* लगभग दो करोड से अधिक व्यक्तियों का कृषि एवं संबंधित व्यवसाय में समावेश जिनमें स्वंरोजगार की प्रेरणा भी सम्मिलित है।
* पानी एवं उर्जा के अपव्यय को रोक कर लगभग आठ हजार से दस हजार रूपये सालाना की बचत के लिए प्रेरणास्पद।

कृषि के विकास एवं ग्रामीण उत्थान में योगदान : असाधारण प्रतिभा के धनी भंवरलाल जैन ने अपने प्रारम्भिक काल १९६३ में कृषि को अपने जीवन का लक्ष्य चुना। वर्ष १९६३से १९७८ के दरम्यान श्री जैन ने कृषि क्षेत्र की असीम संभावनाओं से जुडते हुए उर्वरक खाद, बीज, रासायनिक खाद, टैक्टर एवं कलपुर्जे, सिचाई पंप एवं संबंधित डीजल ऑयल आदि का व्यापार प्रारम्भ किया।

धरती से जुडे पेशेवर किसान के रूप में भवरलालजी जैन ने अपनी दूरदृष्टि और पारखी नजर से वर्ष १९७८ में कृषि उत्पादों के साथ अपने औद्योगिक जीवन की शुरूआत की। श्री. जैन ने कृषकों को एकत्रित कर उन्हें पपीते की खेती के लिए प्रोत्साहित किया, साथ ही साथ उन कृषकों से उचित दर पर पपीता दूध खरीदने का आश्वासन भी दिया। कृषकों के हित में सोचते हुए श्री भवरलाल जैन ने पपीता कॅन्डी बनाने के लिए कृषकों से दागदार पपीते तक खरीदकर उनके साथ लंबे समय तक जुडा रहने वाला रिश्ता कायम कर लिया। पपीता दूध के साथ दागदार पपीता भी खरीदकर श्री जैन ने कृषकों को उत्तम आर्थिक स्तर तक पहुंचने में सहायता की।

वास्तव में उन्होंने :

महाराष्ट्र और सीमा से जुडे मध्यप्रदेश एवं गुजरात के २५०० से उपर लघू कृषकों को अनुशंषा आधार पर पपीता कृषि के लिए प्रेरित किया। एक निर्धारित प्रक्रिया द्वारा पपीता दूध को पपेन नामक एंजाइम में बदला जाता है। श्री जैन ने इस पपेन एंजाइम को वर्ष १९७८ से २००२ तक शतप्रतिशत निर्यात करके कृषकों को पपीते की महत्तता का स्मरण कराया। वर्ष १९७८ में पपेन प्रकृतिक रूप में मात्र बीस रूपये किलोग्राम पर बिकता था। किन्तु अंत में पूरी प्रक्रिया से गुजरने के बाद वही उच्चतम गुणवत्ता का शुद्ध पपेन तीन हजार रूपये प्रति किलोग्राम पर निर्यात किया जाता था। इस तरह श्री. भंवरलाल जैन ने पूर्णतयः कृषि पर आधारित प्रक्रियारत पपीते को शत प्रतिशत निर्यातानुकूल बनाकर औद्योगिक जगत में चमत्कारिक एवं साहसिक कार्य कर दिखाया।

वर्ष १९८० में श्री जैन मुख्यत :

कृषि सिंचन के लिए उपयोगी पीवीसी पाईप का निर्माण प्रारम्भ किया। पीवीसी पाईप के पीछे वैज्ञानिक आधार यह है कि यह पानी के रिसाव एवं बाष्पन को रोक कर कृषकों को समुचित मात्रा में खेती के लिए पानी उपलब्ध

कराता है। उनके इस क्षेत्र में प्रवेश से पहले तीन अन्य पाईप निर्माता अस्तित्व में थे। परन्तु ये निर्माता कृषि के सामाजिक वातावरण को समझने में असमर्थ थे। इन उद्योजकों से भिन्न श्री जैन ने एक विशिष्ट विपणन नीति अपनाई। उन्होंने जनसमाज से जुडे हुए, महाराष्ट्र एवं संलग्न प्रदेशों में जिला स्तर पर अधिकृत विक्रेता नियुक्त किए। श्री जैन ने पीवीसी पाइप इतने लोकप्रिय हो गए कि श्री भवरलाल जैन को वर्ष १९८० में अपने उत्पाद की क्षमता १०० टन प्रति वर्ष से बढाकर वर्ष १९८४ तक उत्पाद क्षमता २३,००० टन प्रति वर्ष करनी पडी। क्योंकि प्रारम्भ से जी श्रे जैन की ''नीति कम लाभांश के साथ अधिक उत्पादन'' की रही है। इसी नीति के कारण कच्चे माल के बढते दामों के बावजूद करीबन पाँच वर्ष तक श्री जैन ने पीवीसी पाईपों के दामों में स्थिरता कायम रखी। इस तरह पीवीसी पाईप उद्योग में श्री जैन के प्रवेश ने एक नया इतिहास रच डाला।

श्री भवरलाल जैन की अप्रत्याशित सफलता ने लघु उद्योजकों को इतना आकर्षित किया कि अल्प काल में ही संपूर्ण भारत में १५० लघु उद्योग ईकाईयाँ उठ खडी हुई। इस तरह से पीवीसी पाईप की सुनिश्चित उपलब्धता ने कृषकों को परिवहन नुकसान से बचाते हुए कृषि उत्पादन को तीव्र किया। इस तरह कृषि में श्री. जैन का तार्किक ज्ञान बढता गया और वह जल बचाने एवं कृषि उत्पन्न की प्रगति की खोज में आगे बढते गए। भारत सरकार ने १९८२-८३ में सिंचाई की छिडकाव एवं टपक पद्धति को प्रोत्साहित करने हेतु एक अनुदान नीति दी। महाराष्ट्र सरकार ने इसी तरह की एक नीति उत्तरार्ध १९८६ में प्रस्तावित की थी। तो भी इन नीतियों के जरिए १९८८-८९ तक महाराष्ट्र में सिर्फ ४०० हेक्टर एवं पूरे भारत में ६०० हेक्टर क्षेत्र टपक पद्धति की सिंचाई का लाभ उठा पाया। संपूर्ण दृश्य लेखा ऐसा है कि आयात किए गए विदेशी उपकरण वितरित तो किए गए परंतु कोई भी सेवायें उपलब्ध नहीं कराई गई। परिणाम स्वरूप उन्नति में एक सिकोड उत्पन्न हो गया। परतु १९८८ में जैन इरिगेशन के इस क्षेत्र में प्रवेश के बाद से विस्तृत एवं चमत्कार पूर्ण दृश्य परिवर्तित हो चुका है।

बिल्कुल प्रारम्भ से श्री जैन ने एकीकृत सोच विकसित की एवं सिर्फ निर्माण और गुणवत्ता पूर्ण उपकरण जैसे ट्यूब एवं फिल्टर के विपणन का विचार न करते हुए उन्होंने कृषकों को अति सहयोगी सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई। जैसे कृषि वैज्ञानिकों एवं अभियांत्रिकों का नियतकालिक कृषि निरिक्षण, प्रशिक्षित कारीगर उपलब्ध कराना, प्रदर्शन, संवाद, साहित्य, सफलता के मंत्र एवं परिणाम जनक सांख्यिकी के आधार पर कृषकों को शिक्षित किया। यह समस्त सुविधाएँ मुलभूत सुविधाओं जैसे भूमि सर्वेक्षण, मृदा एवं जल विश्लेषण और सिंचाई उपकरण की प्रतिष्ठापन के पूर्व विस्तृत ''कैड'' की तैयारी भी करवाती थी एवं कृषि और मौसम संबंधित जानकारी भी उपलब्ध कराती थी।

कृषकों, प्रशासकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सलाहकारों एवं हितचिंतकों के लिए एक वृहद कार्यक्रम जागरूकता हेतू चलाया गया। कृषक मेला, प्रशिक्षण शिबिर इत्यादी बिल्कुल उत्साहपूर्वक एवं जोशिले तौर पर आयोजित किए गए। सिंचाई आयोजन एवं फसल के अनुसार जल की आवश्यकता एक मानक (स्टैण्डर्ड पैकेज) के तौर पर कृषकों को उनके घर पर उपलब्ध कराए गए। शुरूआत में कंपनी के प्रशिक्षित व्यक्ति ने सामान्य जन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई और इस तरह मुलभूत बातों से शुरुवात कर संपूर्ण ज्ञान दिया। इस तरह संपूर्ण देश में टपक सिंचन पद्धति का संपूर्णतयः वैज्ञानिक आधार बन गया।

अब तक देश के तकरीबन हर राज्य में ४१५ कृषक समूह यहाँ अपनी भेंट दे चुके हैं। इसके अतिरिक्त लगभग ५ लाख किसान इस तरह के कार्यक्रमों में भाग ले चुके हैं। लगभग ४,००० से अधिक छात्र शोध एवं विकास के लिए, वीडीओ, ऑडीओ, ग्रामसेवक सरीखे १,२०० सरकारी नुमाइन्दे भी प्रशिक्षित किए जा चुके है। महाराष्ट्र से लगे लगभग सभी पांच राज्यों के कृषि मंत्री भी इन विकासात्मक कार्यों का अवलोकन करने के लिए यहाँ अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। यहाँ तक की उप प्रधानमंत्री, उप राष्ट्रपति व अन्य केंद्रीय स्तर के मंत्री भी कृषकों के हित में चल रहे इन आश्चर्यजनक कार्यों की विकास गाथा में भेंट देकर प्रगति के साक्षी बन चुके हैं। श्री जैन के इन अतिदुष्कर प्रयत्नों का ही नतीजा है कि वर्ष १९८८ में सिंचाई के लिए ६०० हेक्टेर भूमि का प्रतिशत वर्ष २००८ तक लगभग १५ लाख हेक्टेयर तक लाभांवित हो रहा है। आज कंपनी के विकास में प्रतिवर्ष एक से सवा लाख हेक्टेर सिंचन भूमि का इजाफा हो रहा है।

देश के सबसे प्रगतीशील राज्य महाराष्ट्र के जलगाँव में केला उत्पादन, नासिक में अंगूर एवं सोलापर में अनार आदि फलों के लिए सिंचाई बूँद-बूँद से टपक सिंचन पद्धति से की जाती है। आज जबकि विदर्भ का एक बहुत बडा कृषक समाज बागवानी के लिए इस टपक सिंचन पद्धति को अपना रहा है वही दूसरी ओर मराठवाडा परिसर में कपास एवं पश्चिम महाराष्ट्र में गन्ने की खेती के लिए इसे सहजता से स्वीकार किया जा रहा है।

इस मार्ग को प्रशस्त करने में श्री जैन ने अपने जीवन और पेशे का एक बहुमूल्य स्वर्णीम भाग लगा डाला। वे एक नए कृषि उद्योग के वास्तविक निर्माण के जनक बन गए। और एक नई क्रांति का उदय हुआ।

टपक सिंचन प्रणाली को विश्व स्तर पर

योग करने वाले देशों में भारत का दूसरा क्रमांक आता है और यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि, इसका संपूर्ण श्रेय श्री. भवरलाल जैन एवं उनके संस्थान को जाता है। जैन इरिगेशन आज टपक सिंचाई का पर्याय बन चुका है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नही है कि महाराष्ट्र, भारत ही नही अपितु विश्व में भी जैन इरिगेशन में नाम रोशन करते हुए कई सम्मान प्राप्त किये हैं। श्री भवरलाल जैन के अगले पडाव में मील के पत्थर के रूप में केले का कोशिका एवं उतक निर्माण एक प्रभावी कदम के रूप में आया। जो कृषि क्षेत्र में बायो-तकनीक के समावेश के रूप में एक प्रभावपूर्ण सार्थकता का परिचायक है। श्री जैन केले के इस बायो तकनीक उत्पादन के प्रदीर्घ एवं प्रभावी परिणामें के लिए संघर्षरत है। उनका विश्वास है कि वे उच्च गुणवत्ता के परिणाम हासिल करने में सफल रहेंगे। श्री जैन की इस प्रक्रिया रत गुणवत्ता पूर्ण उपज से आज देश के हजारों किसान अपनी केले की फसल में दोगूने से अधिक इजाफा कर चुके है। कृषकों ने अठ्ठारह महिने की फसल उत्पादन की प्रक्रिया में से मात्र ग्यारह महिने में फसल प्रक्रिया पूर्ण कर ग्यारह किलो के केले के गठ्ठे की जगह अब तेईस किलो का केला गठ्ठा प्राप्त किया है। कृषकों की इस सफलता का संदेश आग की तरह पूर्वी राज्यों सहित संपूर्ण देश में फैल गया। नतीजतन देश भर के किसानों ने श्री जैन की इस गुणवत्ता पूर्ण प्रक्रियारत उत्पादन को अपनाने के लिए अपना नामांकन दर्ज करा कर, ऊतकीय केले के बुवाई योग्य नमूनों की प्रतिक्षा प्रारम्भ कर रखी है। और आज स्थिति यह है कि देशभर से बढती मांग में किसान अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे हैं।

श्री जैन ने प्रथमत :

ही व्यापारिक रूप से, सुधारित उन्नत केले की बायोतकनीक से जन्मी नई फसल के परिणाम के रूप में ग्रांड नान के रूप में दर्जेदार केले को बाजार क्षेत्र में उतारा है। उनका स्वप्न है कि वे ग्रांड नान का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यूरोप और अमेरिका के बाजारों में निर्यात करें। अधिकांश महत्वपूर्ण देश अपने उपभोग के लिए भारत से अन्य उत्पादन नही मंगाते। इसलिए यह श्री जैन के प्रभावी नेतृत्व का ही हिस्सा है जो किसानों के लाभांश में सीधे जुडता है। ताजे प्रक्रियारत केले ''ग्रांड नान'' के निर्यात से भारत को विदेशी मुद्रा का लाभ तो हो ही रहा है साथ में भारत की औद्योगिक विकास की दर भी तेजी से बढ रही है। अब शोध प्रक्रिया में नए-नए उत्पादनों को प्रस्तुत करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। श्री जैन अपनी जुझारू एवं खोजात्मक प्रवृत्ति के चलते प्याज, लहसुन एवं ऑस्ट्रेलियन सागवान के बायो तकनीक पर आधारित ऊतक प्रक्रिया के निर्माण में भी सफल हुए है। अब बायो इंधन पौधों के सूक्ष्म विस्तार की प्रक्रिया पर शोध कार्य जारी है। श्री जैन ने अपनी सहनशक्ति से एक कृषक समाज का निर्माण करते हुए जैन हाई-टैक कृषि संस्थान, कृषि आधारित शोध एवं विकास संस्थान, प्रयोगात्मक प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्रों आदि का निर्माण किया। परिणाम स्वरूप लगभग बीस हजार से अधिक कृषक एवं

अन्य उत्सुक प्रतिवर्ष इस हाई-टैक कृषि में उपस्थिति दर्ज करा ताजातरीन विकास के गवाह बनते हैं।

इसके साथ ही वे, एक ही छत के नीचे होने वाली जलसंग्रह प्रयास, बंजर भूमि को कृषि योग्य उपजाऊ बनाने, अबड-खाबड पथरीली पहाडी जमीन पर खेती करने, वर्षा जल का संचय एवं उपयोग, पैदावार और हरित क्रांति के साथ बायो बीज, खाद, दवा आदि के बारे में विस्तार से जानकर और अवलोकन कर संपूर्ण सजीवता का अनुभव प्राप्त करते हैं।

श्री जैन ने निर्जलीकृत सब्जियों एवं प्रक्रियारत फलों की प्रक्रिया को भी अपनाते हुए इस क्षेत्र में लगभग सौ करोड से भी अधिक का पूंजी निवेश किया। अन्य राज्यों की सम्बद्ध प्रभावी फसल के ताजे फल एवं सब्जियों को एकत्रित करने का कार्य भी किया जाता है। सफलता की इन सभी शाखाओं में किसानों के बडी मात्रा में उत्थान के पीछे व्यक्तिगत एवं संस्थात्मक सहयोग का योगदान है। किसानों के साथ व्यापार करते हुए भारतीय समाज का गरीब किसान और व्यापार बहुत ही अनौपचारिक टेढीखीर का कार्य है। किंतु फिर भी श्री भवरलाल जैन का समस्त व्यवसाय किसान ओर किसानों पर आधारित रहा है। क्योंकि श्री जैन इन सबको एक विशिष्ट सिद्धान्तों के साथ चलाते है और बाद में अपने फायदे का ध्यान रखते हैं।

श्री भवरलाल एच. जैन के सामाजिक कर्तव्योंके आधारभूत प्रयत्नों की समिक्षा

प्रमुखता से छोटे किसानोंके रहन-सहन में अकल्पनीय परिवर्तन का श्रेय

उपक्रम	सीधा प्रभाव	समाज को होनेवाला लाभ
पीवीसी पाईप क्रमिक योजना	६० लाख परिवार	ऊर्जा के अपव्यय मे बचत, पानी की अनावश्यक बरबादी में रोकथाम। जिसके कारण अधिक कृषि भुमि के लिए लम्बे समय तक सिचाई सहयोग संभव।

सुक्ष्म सिचाई योजना	१० लाख से अधिक परिवार	प्रति वर्ष १५ हजार प्रति हेक्टर का अतिरिक्त उत्पादन। साथ में दुगनी जमीन सिचाई योजना।
उच्च तंत्र शेती कृषि संस्थान	लगभग १.५ लाख परिवार	प्रशिक्षण नये एवं प्रशिक्षु कृषिकोंके लिए प्रयोगात्मक केंद्र। इसीप्रकार कृषि विद्यार्थी विशेषज्ञ संशोधक एवं अधिकारियों के लिए प्रयोगात्मक प्रदर्शन।
फल एवं सब्जी प्रक्रिया	१० हजार से अधिक परिवार	अधिक लाभांश के कमसे कम मुल्यों में उत्पादन खरीदने की स्विकृती, जिसके कारण किसानों में स्थिरता के साथ-साथ अधिक पैदावार करने की विश्वसनीयता।
केले का उतकीय उत्पादन	१२ हजार से अधिक परिवार	५० हजार रूपये प्रति हेक्टर से अधिक पैदावार। एक जैसे वजन का केला उत्पादन। केला पैदावार के समय में बचत। निर्यात योग्य गुणवत्ता का दुगना उत्पादन।
अनुबंधन कृषि प्रस्ताव	३ हजार किसान	भरपूर कृषि उत्पादन एवं पैदावार। फसल का उचित मुल्यांकन।

औद्योगिक विकास के लिए स्फूर्ती

पीवीसी पाईप क्रमिक योजना	१५० उद्योगपति	लाभदायक स्वयंरोजगार एवं एकत्रित रूपसे आर्थिक स्थितीपर दर्जेदार स्तर के रोजगार के निर्माण के कारण विकासपर होने वाला सकारात्मक परिणाम
सुक्ष्म सिचाई योजना	१०० उद्योगपति	लाभदायक स्वयंरोजगार एवं एकत्रित रूपसे आर्थिक स्थितीपर दर्जेदार स्तर के रोजगार के निर्माण के कारण विकासपर होने वाला सकारात्मक परिणाम
उतक संवर्धन	१०० उद्योगपति	

रोजगार निर्माण के अवसर

अर्धकुशल कारीगर	१२ हजार पीवीसी पाईप, ६ हजार से अधिक टपक सिंचन	पीवीसी पाईप और टपक सिंचन निर्माण कारखानों में सीधे रोजगार के अवसर।
तांत्रिक मनुष्य सहयोग	१२ हजार से अधिक	सुरक्षित लाभदायक स्वयंरोजगार।
कृषि उपयोगि मनुष्य सहयोग	१.७ करोड से अधिक	जमीन से जुडने एवं उन्नत फसल के उत्पादन में रोजगार।

बहुमूल्य जल स्त्रोतों का संरक्षण :

पीवीसी पाईप योजना	१५ से २० प्रतिशत	४४८.५० करोड लीटर प्रतिवर्ष	रू. ४४८ करोड
सुक्ष्म सिचाई योजना	५० से १०० प्रतिशत	१७८०० करोड लीटर प्रतिवर्ष	रू. १७८०० करोड
	कुल	१८२४८.५० करोड लीटर प्रतिवर्ष	रू. १८२४८ करोड

दुर्मिल ऊर्जा की बचत :

उपक्रम	वार्षिक बचत	कुल बचत	आर्थिक परिणाम
पीवीसी पाईप / फुट वॉल	१५ प्रतिशत	४५.०० करोड किलो वॉट प्रतिघंटा	रू. ११३ करोड
सुक्ष्म सिचाई योजना	३० प्रतिशत	१८.५० करोड किलो वॉट प्रतिघंटा	रू. ४०.३ करोड
सौर ऊर्जा पर आधारित पानी	१२०० किलो वॉट प्रतिघर	२.२६ करोड किलो वॉट प्रतिघंटा	रू. ५.६ करोड
	कुल	६५.७६ करोड किलो वॉट प्रतिघंटा	रू. १६४.९ करोड

बहुमुल्य योगदान :

एकात्मिक कृषि विषय पर जनचेतना कर, परिवारोंको साथ जोडने की संगठित नीतिका विकास। जलपुर्नभरण एवं वर्षा जलसंचयन। अनऊपजाऊ कृषि भुमि उपयोग में लाना। वनिकरण एवं पर्यावरण सुरक्षा। फल और सब्जी पर प्रक्रिया एवं निर्यात। मनुष्य सशक्तिकरण।

पुरस्कार सम्मान

क्रम	पुरस्कार/सम्मान का नाम	मातृ संस्था	हस्ते	अलंकरण	वर्ष	स्तर
१	सम्माननीय सदस्यता	एम.बी.ए. अमेरिका		विदेशी सदस्यता का चयन।	१९८०	आई.एन.टी. एन.एल
२	उद्योग पत्र	आई.टी.आई.डी. नई दिल्ली	एम. हिदायतुल्ला, उपराष्ट्रपति भारत सरकार	स्वयंनिर्मित उद्योगपति।	१९८२	राष्ट्रिय
३	बधाई पात्र	स्वयंसेवी संगठन,जामनेर	मोरारजी देसाई, पुर्वप्रधानमंत्री	कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य।	१९८२	क्षेत्रिय
४	आई.एम.एम.बाटा विपणन पुरस्कार	आई.एम.एम.बाटा	ज्ञानी जैलसिंह, राष्ट्रपति भारत सरकार	विपणन रजत पुरस्कार, लघु उद्याजकोंके रूपमें।	१९८३	राष्ट्रिय
५	ए.आर.भट्ट औद्योगिक पुरस्कार	एफ.ए.एस.एस.आई.	आर.वेंकटरामन, राष्ट्रपति भारत सरकार	रासायनिक कृषि उत्पादोंके क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान।	१९८३	राष्ट्रिय

६	प्रशंसा प्रमाणपत्र	एम.एस.एफ.सी.	एस.आर.दामानी, अध्यक्ष एम.एस.एफ.सी.	ए.आर.भट्ट औद्योगिक पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में।	१९८४	राज्यस्तरीय
७	उद्योग विभूषण	आई.टी.आई.डी. नई दिल्ली	प्रणव मुखर्जी, योजना आयोग के उपाध्यक्ष	औद्योगिक क्षेत्र में श्रेष्ठतम प्रस्तुति।	१९९२	राष्ट्रिय
८	सम्माननीय सदस्यता	आई.आई.आई.ई. हैदराबाद अध्याय	कृष्णाकांत, आंध्रप्रदेश राज्यपाल	राष्ट्रिय एवं व्यावसायिक सफलता, शिखरता।	१९९३	राष्ट्रिय
९	एअ .आई.ई. फाउंडेशन पुरस्कार	स्वयंसेवी संगठन, इचलकरंजी	शिवराज पाटील, स्पीकर लोकसभा	कृषि एवं प्रबंधन में खोज।	१९९५	राष्ट्रिय
१०	क्रॉफर्ड रीड मेमोरियल पुरस्कार	यू. एस.ए. सिचाई संगठन	श्री लॉईस टोथ, अध्यक्ष यु.एस.ए. सिचाई संगठन	अमेरिका से बाहर सिचाई तक निक के विस्तार एवं उपयोग के प्रोत्साहन।	१९९७	अंतरराष्ट्रिय
११	वसंतराव नाईक कृषि संशोधन एवंम ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान पुरस्कार	बी.एन.के.एस-जी.वी.पी. पुसद	-	अमेरिका के बाहर विश्व में सिचाई की तकनीक के विस्तार में अभूतपुर्व योगदान के लिए मिले पुरस्कार के लिए।	१९९७	राज्यस्तरीय
१२	वसंतराव नाईक स्मृति पुरस्कार	बी.एन.एस.पी.पुसद	-	कृषि क्षेत्र में अभूतपुर्व योगदान के लिए	१९९८	राज्यस्तरीय
१३	यशोदीप पुरस्कार	आई.ई.आई. नासिक	माधवराव चितडे, अध्यक्ष - ग्लोबल वाटर पार्टनरशिप	सिचाई क्षेत्र की नई कल्पनाओं के साथ विश्व में नाम रोशन करने के लिए।	२००१	राज्यस्तरीय
१४	जीवन गौरव	रोटरी क्लब मुंबई	डॉ. गुलाम, रोटरी क्लब मुंबई डाऊनटाऊन	कृषि एवं सिंचाई क्षेत्र में, देश की प्रगती में उल्लेखनीय योगदान के लिए।	२००१	रोटरी
१५	गौरव सम्मान	स्वयंसेवी संगठन (बी.जे.एस.), भुज	अटलबिहारी बाजपेयी, प्रधानमंत्री भारत सरकार	भुज भूकंप पिडितों के लिए असाधारण कार्य करने के संदर्भ में।	२००१	राष्ट्रिय
१६	गांधी-आम्बेडकर सामाजिक न्याय पुरस्कार	गांधी-आम्बेडकर फाउंडेशन मुंबई	चंद्रशेखर धर्माधिकारी, पुर्वन्यायाधीश	कृषि उद्योग में लम्बे समयतक के योगदान के लिए।	२००२	राष्ट्रिय
१७	कृषि तंत्र रत्न	वी.सी.टॅक्स फाउंडेशन मुंबई	पद्मविभूषण डॉ.वर्गीस कुरीयन	कृषि क्षेत्र में नये तंत्रको प्रोत्साहन देने के लिए।	२००४	राज्यस्तरीय
१८	कृषि आयोगिक, सामाजिक प्रबंधन कार्यकुशलता	यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई	पद्मश्री एन.डी.महानोर, मराठी कवि	महाराष्ट्र के आपदाप्रभावी क्षेत्रोंमें टपक सिंचन का प्रसार करके कृषि में नये संशोधन लाने के योगदान के लिए।	२००६	राज्यस्तरीय
१९	भारत का जलरक्षक	युनेस्को एवं वाटर डिजेस्ट	जयप्रकाश नारायण यादव, केंद्रीय राज्यमंत्री जलसंरक्षण	जलक्षरण रोकने एवं पुर्नभरण मे योगदान के लिए।	२००६	राष्ट्रीय
२०	'मानद उपाधि (डॉक्टर ऑफ लिट)''	उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जलगाँव	डॉ. आर.एस.माली, कुलगुरू, उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जलगाँव	कृषि फलोत्पादन सुक्ष्म सिंचन जलरक्षण एवं सामाजिक कार्योंके लिए।	२००६	राज्यस्तरीय
२१	'मानद उपाधि (डॉक्टर ऑफ सायन्स)''	कोकण कृषि विद्यापीठ, महाराष्ट्र	डॉ. एस.एस.मगर, कुलगुरू, कोकण कृषि विद्यापीठ, दापोली	कृषि फलोत्पादन सुक्ष्म सिंचन जलरक्षण एवं सामाजिक कार्योंके लिए।	२००६	राज्यस्तरीय
२२	'मानद उपाधि (डॉक्टर ऑफ सायन्स)''	महाराणा प्रताप कृषि एवं तंत्रज्ञान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान	श्रीमती प्रतिभा देविसिंह पाटील, कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं तंत्रज्ञान विश्वविद्यालय, जयपुर, राज्यपाल-राजस्थान	कृषि फलोत्पादन सुक्ष्म सिंचन जलरक्षण एवं सामाजिक कार्योंके लिए।	२००६	राष्ट्रीय
२३	पद्मश्री सम्मान	गृहमंत्रालय, भारत सरकार	महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देविसिंह पाटील, भारत सरकार	कृषि विज्ञान एवं औद्योगिक क्षेत्र में अभूतपूर्व सामाजिक योगदान के लिए।	२००८	राष्ट्रीय